Ready For Boards
10th & 12th Exam Prep

CHAPTER 1

# आत्म-परिचय • दिन जल्दी-जल्दी ढलता है

हरिवंश राय बच्चन · आरोह भाग 2 · CBSE कक्षा 12 हिंदी आधार

CBSE · हिंदी आधार · Class 12

## WHAT THIS CHAPTER DOES

**A** बच्चन की 'आत्म-परिचय' के तीन विरोधाभासों को पंक्ति-उद्धरण सहित स्पष्ट करना।

**B** 'जग-जीवन का भार' एवं 'स्नेह-सुरा' के रूपकों को हालावादी सन्दर्भ में समझना।

*Boards prep that builds confidence, not anxiety.*

TODAY'S MISSION

# आज का लक्ष्य

1. बच्चन की 'आत्म-परिचय' के तीन विरोधाभासों को पंक्ति-उद्धरण सहित स्पष्ट करना।
2. 'जग-जीवन का भार' एवं 'स्नेह-सुरा' के रूपकों को हालावादी सन्दर्भ में समझना।
3. 'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है' के त्रिकोण — पथिक · पक्षी · कवि — को कंठस्थ करना।
4. 5-अंकी विरोधाभास वाला उत्तर टोपर टेम्पलेट के अनुसार लिखना।

WHY THIS MATTERS

# यह अध्याय क्यों महत्त्वपूर्ण है

1. आरोह काव्य खंड का प्रथम पाठ — पूरे वर्ष की कविता-पठन शैली की नींव।
2. प्रति बोर्ड पेपर **4-6** अंक। विरोधाभास + प्रत्याशा के प्रश्न लगभग प्रति-वर्ष आते हैं।
3. बच्चन हालावाद के प्रमुख कवि — रूपक की पहचान का कौशल यहीं सिखाया जाता है, आगे की कविताओं में भी काम आता है।

TOPIC

# A

# आत्म-परिचय — कवि का स्व-परिचय

THEOREM · LOAD-BEARING RESULT

# आत्म-परिचय की केंद्रीय छवि

> कवि अपने व्यक्तित्व को विरोधी ध्रुवों के एक साथ जीवित रहने के रूप में प्रस्तुत करता है — जग का भार और जीवन का प्यार दोनों उसके साथ हैं।

## STATEMENT

केंद्रीय पंक्ति — 'मैं जग-जीवन का भार लिए फिरता हूँ / फिर भी जीवन में प्यार लिए फिरता हूँ।' इस एक छंद में बच्चन का सम्पूर्ण दर्शन समाहित है — जीवन के दुख को टालकर नहीं, उसे ढोते हुए भी प्रेम बचाए रखना। 'लिए फिरता' क्रिया विशेष महत्व रखती है — यह स्वीकार-भाव है, पलायन नहीं।

## WHY THIS MATTERS

- यह छंद बच्चन के काव्य-दर्शन का सूत्र है। हर अन्य पंक्ति की व्याख्या इसी छंद से जुड़कर खुलती है। परीक्षा में लगभग हर वर्ष इसी से जुड़ा प्रश्न आता है।

## WATCH OUT FOR

**NOTE** 'भार' को केवल आर्थिक बोझ न समझें। यहाँ 'जग-जीवन का भार' सम्पूर्ण मानवीय अनुभव का बोझ है — सम्बन्ध, स्मृतियाँ, अधूरे सपने, सामाजिक दायित्व — सब इसमें समाहित।

TOPIC

# आत्म-परिचय में प्रमुख तीन विरोधाभास

### 1. भार बनाम प्यार

'मैं जग-जीवन का भार लिए फिरता हूँ / फिर भी जीवन में प्यार लिए फिरता हूँ।' — जीवन का बोझ ढोते हुए भी कवि प्रेम बचाए रखता है। दुख कवि की हार नहीं — उसका साथी है, और उसी के बीच प्रेम जीवित है।

### 2. स्नेह-सुरा बनाम जग-निरपेक्षता

'मैं स्नेह-सुरा का पान किया करता हूँ / मैं कभी न जग का ध्यान किया करता हूँ।' — कवि स्नेह को मादक रस की भाँति पीता है, साथ ही लोकमर्यादा से उन्मुक्त रहता है। प्रेम में डूब और संसार से निर्लिप्ति — दोनों एक साथ।

### 3. एकाकीपन बनाम पूर्णता

'मैं और, और जग और, कहाँ का नाता / मैं बना-बना कितने जग रोज़ मिटाता।' — कवि का जग संसार से भिन्न है, फिर भी वह अपनी कल्पना से रोज़ नए जग रचता-मिटाता है। यह अकेलापन नहीं — सृजनशील एकांत है।

### विरोधाभास का अर्थ

बच्चन के लिए विरोधाभास भ्रम नहीं — मानव-व्यक्तित्व की पूर्णता का सूत्र है। हर मनुष्य दुख-सुख, संसक्ति-निरासक्ति, प्रेम-वैराग्य के द्वंद्व से बना है। आत्म-परिचय इसी पूर्णता की घोषणा है।

THEOREM · LOAD-BEARING RESULT

# 'स्नेह-सुरा' — हालावादी रूपक का अर्थ

> बच्चन के काव्य में 'सुरा' का अर्थ मादक पेय नहीं — यह स्नेह, प्रेम, जीवन-रस का प्रतीक है। 'स्नेह-सुरा का पान' का अर्थ है कि कवि प्रेम को मद्य की भाँति पीकर जीवित है।

## STATEMENT

हालावाद की केंद्रीय परिपाटी में — मधुशाला, मधुबाला, सुरा, प्याला — सभी रूपक हैं, शाब्दिक नहीं। बच्चन की प्रसिद्ध कृति 'मधुशाला' पूरी इसी रूपक-शैली पर रची गई है। यहाँ 'मधु' (शहद/मद्य) जीवन के मधुर रस का प्रतीक है, और मधुशाला (मद्यालय) उस संसार का जहाँ यह रस उपलब्ध है।

## WHY THIS MATTERS

- इस रूपक की पहचान न करने से छात्र शाब्दिक अर्थ लगा बैठते हैं और परीक्षक तत्काल 1-2 अंक काट देता है। हालावादी सन्दर्भ में इन प्रतीकों की व्याख्या प्रश्न का अनिवार्य अंग है।

## WATCH OUT FOR

**NOTE** कभी न लिखें — 'कवि शराब पीकर लिख रहा है।' यह भारी ग़लती है। हमेशा कहें — 'स्नेह-सुरा एक रूपक है — स्नेह को मादक रस के रूप में चित्रित किया गया है।'

TOPIC

# B

# एक गीत — दिन जल्दी-जल्दी ढलता है

THEOREM · LOAD-BEARING RESULT

# दिन जल्दी-जल्दी ढलता है — का केंद्रीय भाव

> कविता सूर्यास्त के बहाने तीन भिन्न प्रत्याशा-स्थितियों को रचती है — और यह दिखाती है कि प्रत्याशा होने एवं प्रत्याशा न होने में जीवन का सबसे गहरा भेद छिपा है।

## STATEMENT

त्रिकोण — **(1)** पथिक संध्या में जल्दी चलता है क्योंकि घर पर कोई प्रतीक्षारत है; **(2)** पक्षी संध्या में पंख फड़काता है क्योंकि नीड़ में बच्चे प्रत्याशा में होंगे; **(3)** कवि — जिसके लिए कोई प्रत्याशी नहीं — और यही अभाव उसके अंतर्मन में 'चंचलता' एवं 'व्यथा' उत्पन्न करता है।

## WHY THIS MATTERS

- बच्चन यहाँ एक मनोवैज्ञानिक सत्य कहते हैं — मनुष्य की गति का प्रेरक तत्व दूरी या समय नहीं, प्रत्याशा है। जिसके लिए कोई प्रतीक्षारत है वह थका हुआ भी तेज़ चलता है
- जिसके लिए कोई नहीं — उसके लिए लौटने में अर्थ ही नहीं रहता।

## WATCH OUT FOR

**NOTE** इस कविता को केवल सूर्यास्त की कविता मत कहें। सूर्यास्त बहाना है — विषय 'प्रत्याशा' है। पक्षी वाली पंक्ति विशेष रूप से याद रखें — सबसे अधिक छात्र इसी को भूल जाते हैं।

TOPIC

# त्रिकोण — पथिक • पक्षी • कवि

### पथिक

संध्या ढलते ही पथिक के डग जल्दी-जल्दी पड़ने लगते हैं। 'जिस घर में जा गिरते हैं किरण-सी सुहाने / उस घर में कोई होता है दीप जलाने।' — कोई उसकी प्रतीक्षा में दीप जलाता है। प्रत्याशा उसकी थकान भी पार करा देती है।

### पक्षी

पक्षी संध्या में पंख तेज़ी से फड़काकर नीड़ की ओर लौटता है। 'बच्चे होंगे प्रत्याशा में' — यह छोटा-सा पक्षी भी इसी विश्वास से उड़ता है कि घोंसले में उसके बच्चे राह देख रहे हैं। प्रत्याशा पक्षी को भी गति देती है।

### कवि

कवि के लिए दृश्य विपरीत है। उसका कोई प्रत्याशी नहीं — कोई दीप जलाने वाला नहीं, कोई नीड़ में बच्चे नहीं। 'मुझसे मिलने को कौन विकल' — यह प्रश्न ही उसके एकाकीपन की पीड़ा का स्वर है।

### बच्चन का निष्कर्ष

कविता का गहरा सत्य यह है — मानव की 'चंचलता' (तेज़ी, उत्साह) अधिकांशतः किसी की प्रत्याशा से जन्म लेती है। जिसके लिए कोई नहीं — उसके लिए संध्या में लौटने में जल्दी नहीं — बस व्यथा है।

TOPIC

C

# बच्चन की काव्य-शैली

TOPIC

# बच्चन की शैली के पाँच लक्षण

### हालावादी रूपक

मधु, मधुशाला, सुरा, प्याला — सब रूपक। प्रेम/जीवन-रस के प्रतीक। 'मधुशाला' संग्रह इसी का चरम।

### विरोधी ध्रुवों का संयोग

भार-प्यार, रोना-गाना, अकेलापन-पूर्णता — विरोधी अनुभव एक छंद में। यह बच्चन की सर्वाधिक पहचानी जाने वाली शैली।

### गेय छंद-योजना

दोनों कविताएँ गाई जा सकती हैं। आत्म-परिचय में पंक्ति-अंत में 'फिरता हूँ', 'पीकर भी'; दिन जल्दी-जल्दी में 'ढलता है', 'होंगे प्रत्याशा में' — पुनरुक्ति से गेयता।

### प्रथम-पुरुष आत्म-कथन

दोनों कविताएँ 'मैं' से रची हैं — कवि स्वयं को विषय बनाता है। यह आत्मकथात्मक स्वर बच्चन की पहचान।

TOPIC

# एक ही कविता का भ्रम

**TRAP → TRUTH**

× **MISTAKE** अध्याय में एक ही कविता है।

✓ **CORRECT** अध्याय में दो स्वतंत्र कविताएँ हैं — (1) 'आत्म-परिचय' एक ग़ज़ल-स्वरूपी आत्मकथात्मक कविता है जिसमें कवि अपने व्यक्तित्व के विरोधाभास प्रकट करता है, और (2) 'एक गीत — दिन जल्दी-जल्दी ढलता है' एक गीत के रूप में रचा गया है जिसमें कवि सांध्य-वेला के बहाने प्रत्याशा एवं एकाकीपन की भावना को व्यक्त करता है। दोनों कविताओं की रचना, स्वर और भाव-विषय भिन्न हैं।

TOPIC

# विरोधाभास का अर्थ

**TRAP → TRUTH**

× **MISTAKE** कवि के विरोधाभासी कथन यह दर्शाते हैं कि वह स्वयं भ्रमित या असमंजस में है।

✓ **CORRECT** विरोधाभास भ्रम नहीं — यह बच्चन की काव्य-शैली का जीवन-दर्शन है। कवि कहता है कि वह 'जग-जीवन का भार' भी ढोता है और 'स्नेह-सुरा का पान' भी करता है; 'रोता' भी है और 'गाता' भी; जग को 'देखता' भी है और 'गहरे लिए फिरता' भी है। ये विरोधी अनुभव एक साथ रहकर मानव-जीवन की सम्पूर्णता बनाते हैं। बच्चन का व्यक्तित्व इन्हीं विरोधी ध्रुवों के बीच जीवित है — यह असमंजस नहीं, बहुस्तरीयता है।

TOPIC

# 'जग-जीवन का भार' की व्याख्या

TRAP → TRUTH

× **MISTAKE** इसका अर्थ केवल आर्थिक / पारिवारिक बोझ है।

✓ **CORRECT** 'जग-जीवन का भार' केवल लौकिक बोझ नहीं — यह जीवन की सम्पूर्ण ज़िम्मेदारी, संसार के दुख-सुख, स्मृतियों, अधूरे सपनों एवं मानवीय सम्बन्धों के समग्र दायित्व का प्रतीक है। कवि कहता है कि वह यह भार 'लिए फिरता' है — अर्थात् वह इसे छोड़कर नहीं भागता; इसे ढोते हुए भी वह जीवन से प्रेम करता है। यह बच्चन के जीवन-दर्शन की केंद्रीय छवि है।

TOPIC

# 'स्नेह-सुरा' का शाब्दिक अर्थ

**TRAP → TRUTH**

× **MISTAKE** कवि शराब का सेवन करता है।

✓ **CORRECT** 'स्नेह-सुरा' एक रूपक है — हालावाद की केंद्रीय परिपाटी। यहाँ 'सुरा' का अर्थ मादक पेय नहीं, बल्कि स्नेह/प्रेम/जीवन-रस है। कवि कहता है कि वह स्नेह को मादक रस की भाँति पीकर जीवित है — प्रेम ही उसकी जीने की प्रेरणा है। बच्चन की मधुशाला, मधुबाला, सुरा, प्याला — सभी रूपक हैं, शाब्दिक नहीं। यहाँ इन प्रतीकों की पहचान न करना उत्तर का सबसे बड़ा दोष होता है।

TOPIC

# 'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है' का सतही पाठ

**TRAP → TRUTH**

× **MISTAKE** यह कविता केवल सूर्यास्त का वर्णन है।

✓ **CORRECT** यह कविता समय की द्रुत गति का बहाना लेकर तीन भिन्न प्रत्याशा-स्थितियों को रचती है — (1) पथिक जो जल्दी-जल्दी चलता है क्योंकि घर पर कोई प्रतीक्षा कर रहा है; (2) पक्षी जो जल्दी-जल्दी पंख फड़काता है क्योंकि नीड़ में बच्चे राह देखते हैं; (3) कवि जिसके लिए कोई प्रतीक्षारत नहीं — और यही अनुपस्थिति उसके अंतर्मन में 'चंचलता' एवं 'व्यथा' उत्पन्न करती है। कविता का केंद्रीय भाव सूर्यास्त नहीं, प्रत्याशा का अभाव है।

TOPPER TEMPLATE · MARK-BY-MARK

# 5 अंक — 'आत्म-परिचय' कविता में कवि के व्यक्तित्व के विरोधाभासों को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

| | | |
|---|---|---|
| 1 | विरोधाभास की परिभाषा — 1 m | विरोधाभास उस काव्य-स्थिति को कहते हैं जिसमें कवि एक ही व्यक्ति या अनुभव के परस्पर विरोधी पक्षों को साथ-साथ प्रस्तुत करता है। बच्चन की 'आत्म-परिचय' इसी शैली पर रची गई है — कवि अपने व्यक्तित्व को विपरीत ध्रुवों के द्वंद्व के रूप में प्रकट करता है। |
| 2 | पहला विरोधाभास — भार बनाम मस्ती — 1 m | कवि कहता है — 'मैं जग-जीवन का भार लिए फिरता हूँ / फिर भी जीवन में प्यार लिए फिरता हूँ।' एक ओर वह जीवन का सम्पूर्ण भार ढो रहा है, दूसरी ओर इसी भार के बीच प्यार बचाए रखता है। यह दर्शाता है कि वह दुखों से हारता नहीं — वह उन्हें स्वीकार करता है और उनके साथ ही प्रेम का जीवन भी जीता है। |
| 3 | दूसरा विरोधाभास — रोना बनाम गाना — 1 m | 'मैं स्नेह-सुरा का पान किया करता हूँ / मैं कभी न जग का ध्यान किया करता हूँ।' कवि स्नेह को मद्य की भाँति पीता है, साथ ही जग के नियमों की चिंता भी नहीं करता। एक ओर वह प्रेम में डूबा है — दूसरी ओर लोकमर्यादा से उन्मुक्त है। यह उसकी आत्म-निर्भरता एवं स्वच्छंदता का दोहरा प्रमाण है। |
| 4 | तीसरा विरोधाभास — अकेलापन बनाम पूर्णता — 1 m | 'मैं और, और जग और, कहाँ का नाता / मैं बना-बना कितने जग रोज़ मिटाता।' कवि कहता है कि उसका जग और संसार का जग एक नहीं — फिर भी वह अपनी कल्पना से रोज़ नए जग रचता है और उन्हें मिटाता है। उसका एकाकीपन अकेलापन नहीं — यह सृजनशील एकांत है, जिसमें वह स्वयं अपना संसार है। |
| 5 | निष्कर्ष — विरोधाभास ही व्यक्तित्व — 1 m | बच्चन की काव्य-दृष्टि यह है कि मानव-व्यक्तित्व किसी एक भाव से नहीं बनता — वह सुख-दुख, प्रेम-वैराग्य, संसक्ति-निरासक्ति के द्वंद्व से बनता है। 'आत्म-परिचय' इन्हीं विरोधी ध्रुवों के एक साथ जीवित रहने की घोषणा है। कवि का 'मैं' इन्हीं द्वंद्वों में पूर्ण होता है। |

TOPPER TEMPLATE · MARK-BY-MARK

# 3 अंक — 'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है' कविता में पथिक, पक्षी एवं कवि की स्थिति में क्या भेद है?

| | | |
|---|---|---|
| 1 | पथिक की स्थिति<br>1 m | पथिक संध्या होते ही अपने डग जल्दी-जल्दी बढ़ाता है क्योंकि उसे ज्ञात है कि घर पर उसकी प्रतीक्षा हो रही है। 'जिस घर में जा गिरते हैं किरण-सी सुहाने / उस घर में कोई होता है दीप जलाने।' पथिक की चाल में प्रत्याशा की प्रेरणा है — कोई उसे राह देख रहा है, इसी सोच से वह थका हुआ भी तेज़ चलता है। |
| 2 | पक्षी की स्थिति<br>1 m | पक्षी संध्या में अपने पंखों को जल्दी-जल्दी फड़काकर नीड़ की ओर लौटता है क्योंकि उसके बच्चे प्रत्याशा में होंगे। 'बच्चे होंगे प्रत्याशा में' — यह छोटा-सा पक्षी भी इसी विश्वास के बल पर रात्रि-पूर्व अपने घर पहुँचना चाहता है। प्रत्याशा पथिक एवं पक्षी दोनों को गति देती है। |
| 3 | कवि की स्थिति — विपरीत<br>1 m | कवि के लिए दृश्य उलटा है — उसका कोई प्रत्याशी नहीं। सूर्यास्त उसके लिए घर लौटने की पुकार नहीं, बल्कि उस अभाव का स्मरण है। वह स्वयं से प्रश्न पूछता है — 'मुझसे मिलने को कौन विकल?' — अर्थात् उसके लौटने पर कोई व्याकुल नहीं। यही अभाव उसके अन्तर्मन में 'चंचलता' एवं 'व्यथा' उत्पन्न करता है। बच्चन यहाँ प्रत्याशा का अभाव को मानव-व्यथा का सबसे गहन रूप कहते हैं। |

TOPPER TEMPLATE · MARK-BY-MARK

# 3 अंक — 'मैं जग-जीवन का भार लिए फिरता हूँ' — कवि किस भार की बात कर रहा है?

| | | |
|---|---|---|
| 1 | भार का स्वरूप<br>1 m | 'जग-जीवन का भार' का अर्थ है — संसार के सम्पूर्ण अनुभवों का बोझ। यह केवल आर्थिक या पारिवारिक बोझ नहीं — यह अधूरे सपनों, टूटे रिश्तों, स्मृतियों, सामाजिक दायित्वों एवं अपने आदर्शों के निर्वाह का सम्मिलित भार है। कवि के व्यक्तित्व का यह वह पक्ष है जो जीवन की कठोर सच्चाइयों से बनता है। |
| 2 | भार के साथ कवि का सम्बन्ध<br>1 m | महत्वपूर्ण यह है कि कवि इस भार से भागता नहीं — वह इसे 'लिए फिरता' है। 'लिए फिरता' क्रिया से स्पष्ट है कि कवि इसे साथ लेकर चल रहा है — स्वीकार करता है, टालता नहीं। बच्चन का दर्शन यह है कि जीवन-भार को नकारना नहीं, उसे अपने जीवन का अंग बनाना है। |
| 3 | विरोधाभास के साथ अर्थ की पूर्णता<br>1 m | अगली पंक्ति में कवि कहता है — 'फिर भी जीवन में प्यार लिए फिरता हूँ।' अर्थात् भार के साथ-साथ वह प्रेम भी लिए चलता है। दोनों एक साथ रहते हैं। यही बच्चन की रचना का मूल — दुख जीवन का अंत नहीं, उसके साथ प्रेम भी सहज सम्भव है। 'जग-जीवन का भार' का पूर्ण अर्थ इसी विरोधी संयोग में खुलता है। |

PYQ PATTERNS

# Top PYQ patterns to drill

| | | |
|---|---|---|
| #1 | 'आत्म-परिचय' कविता में कवि ने अपने व्यक्तित्व के किन-किन विरोधाभासों को प्रकट किया है? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए। (5 अंक marks) | वार्षिक |
| #2 | 'मैं जग-जीवन का भार लिए फिरता हूँ' | कवि किस भार की बात कर रहा है? व्याख्या कीजिए। (3 अंक marks) — वार्षिक |
| #3 | 'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है' कविता का केंद्रीय भाव क्या है? पंक्तियों के सन्दर्भ में व्याख्या कीजिए। (5 अंक marks) | अधिकांश वर्षों में |
| #4 | पथिक, पक्षी और कवि | तीनों की प्रत्याशा-स्थिति में क्या भेद है? (3 अंक marks) — 2019, 2021, 2023 |
| #5 | बच्चन की 'स्नेह-सुरा' का रूपक क्या व्यक्त करता है? (2-3 अंक marks) | 2018, 2020, 2022, 2024 |

MARKS DISTRIBUTION

# 10-year marks distribution

## 10-YEAR PYQ MARKS DISTRIBUTION

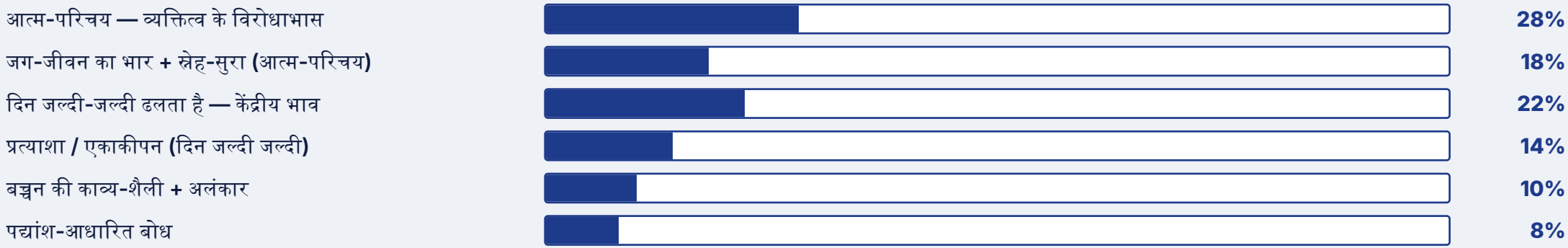

RECAP · MEMORISE THESE

# स्मरणीय बिंदु

**1** कवि-परिचय — हरिवंश राय बच्चन (1907-2003), हालावाद के प्रमुख कवि, 'मधुशाला' एवं 'निशा-निमंत्रण' से प्रसिद्ध।

**2** तीन केंद्रीय पंक्तियाँ — (1) 'मैं जग-जीवन का भार लिए फिरता हूँ / फिर भी जीवन में प्यार लिए फिरता हूँ।' (2) 'मैं स्नेह-सुरा का पान किया करता हूँ।' (3) 'बच्चे प्रत्याशा में होंगे।'

**3** आत्म-परिचय का सार — विरोधी ध्रुवों के एक साथ जीवित रहने में मानव-व्यक्तित्व की पूर्णता — दुख ढोते हुए भी प्रेम।

**4** दिन जल्दी-जल्दी का सार — त्रिकोण — पथिक (प्रत्याशा है) · पक्षी (प्रत्याशा है) · कवि (प्रत्याशा नहीं) — और अभाव का संताप।

**5** रूपक की पहचान — हालावादी रूपकों को कभी शाब्दिक अर्थ न दें। सुरा = स्नेह/प्रेम/जीवन-रस।

**6** अंक-निधि — विरोधाभास का प्रश्न — 95% पेपरों में। प्रत्याशा-त्रिकोण — 85% पेपरों में। पक्षी की पंक्ति — सबसे अधिक छात्रों द्वारा छूटने वाली।

WHAT'S NEXT

# अगला अध्याय

→ अध्याय 2 — पतंग · आलोक धन्वा (आधुनिक हिंदी कविता)।

→ 15 MCQ की त्वरित-ड्रिल हल करें।

→ 30 अंकी बोर्ड-पैटर्न पेपर लिखें।

Ready For Boards
10th & 12th Exam Prep

# आपने आरोह का पहला काव्य अध्याय समाप्त किया।

विरोधाभास · प्रत्याशा · रूपक — अब परीक्षा में सिद्ध कीजिए।

**readyforboards.com**

**Helpline: +91 70330 05444**

*Boards prep that builds confidence, not anxiety.*